http://www.civilserviceindia.com

C.S.E. (MAIN)

HINDI – 2005

(Literature)

PAPER – II

Time Allowed : Three Hours *Maximum Marks : 300*

Candidates should attempt questions 1 and 5 which are compulsory, and any THREE of the remaining questions selecting at least ONE question from each Section.
The number of marks carried by each question is indicated at the end of the question.
Answer must be written in Hindi.

SECTION – A

1. किन्हीं *तीन* पर टिप्पणियाँ लिखिए : 20 × 3 = 60
   (क) ब्रजभाषा की व्याकरणिक विशेषताएँ
   (ख) राजभाषा और राष्ट्रभाषा का तात्त्विक भेद
   (ग) सिद्धनाथ-साहित्य में प्रारंभिक खड़ी बोली
   (घ) दक्खिनी हिन्दी के प्रमुख हस्ताक्षर
2. पूर्वी हिन्दी और पश्चिमी हिन्दी की भेदक रेखाएँ निर्धारित कीजिए। 60
3. 'हिन्दी भाषा की विकास-यात्रा' पर एक नातिदीर्घ लेख लिखिए। 60
4. देवनागरी लिपि के 'गुण-दोष' की विवेचना कीजिए। 60

SECTION – B

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणियाँ लिखिए : 20 × 3 = 60
   (क) सूर की राधा (ख) बिहारी का अर्थगर्भत्व
   (ग) हिन्दी के ललित निबंधकार
   (घ) हिन्दी-आलोचना और डॉ. रामविलास शर्मा
6. हिन्दी के आदिकालीन साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षरों का संक्षिप्त परिचय दीजिए। 60

http://www.civilserviceindia.com

7. भक्तिकाल को लोक-जागरण की अभिव्यक्ति क्यों कहते हैं ? सतर्क उत्तर दीजिए। 60

8. 'नवजागरण और छायावाद' विषय पर एक निबन्ध लिखिए। 60

PAPER – II – 2005

Time Allowed : Three Hours *Maximum Marks : 300*

Candidates should attempt questions 1 and 5 which are compulsory, and any THREE of the remaining questions selecting at least ONE question from each Section.

All questions carry equal marks.

Answers must be written in HINDI.

SECTION – A

1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं **तीन** की संदर्भसहित व्याख्या करते हुए उनकी काव्यगत विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए :

$20 \times 3 = 60$

(क) जोंग ठगौरी ब्रज न बिकैहै।
यह व्योपार तिहारो ऊधो एसोई फिरि जैहै ॥
जापै लै आए हौ मधुकर ताके उर न समैहै।
दाख छाँड़िकै कटुक निबौरी को अपने मुख खैहै ?
मूरी के पातन के केना को मुक्ताहल दैहै ?
सूरदास प्रभु गुनहिं छाँड़िकै को निर्गुन निरबैहै ?

(ख) चढ़ा अषाढ़ गगन घन गाजा। साजा बिरह दुंद दल बाजा।
घूम स्याम धौरे घन धाए। सेत धुजा बगु पाँति देखाए।
खरग बीज चमकै चहुँ औरा। बुंद बान बरिसै घनघोरा।
अद्रा लाग बीज भुई लेई। मोहि प्रिय बिनु को आदर देई।

(ग) भूल रहे हो धर्मराज, तुम,
अभी हिंस्र भूतल है,
खड़ा चतुर्दिक् अहंकार है,

http://www.civilserviceindia.com

खड़ा चतुर्दिक् छल है ।
मैं भी हूँ सोचता, जगत से
कैसे उठे जिघांसा ।
किस प्रकार फैले पृथ्वी पर
करुणा, प्रेम, अहिंसा ।

(घ) बैठे मारुति देखते राम-चरणारविन्द
युग 'अस्ति-नास्ति' के एक-रूप, गुण-गण-अनिन्द्य
साधना-मध्य भी साम्य-वाम-कर दक्षिण-पद,
दक्षिण करतल पर वाम चरण, कपिवर गद्‌गद ।

2. 'भ्रमर-गीत सार' के दार्शनिक पक्ष की विवेचना करते हुए उसके काव्यगत महत्त्व की समीक्षा कीजिए । 60

3. रूपक तत्त्व की दृष्टि से 'कायामनी' की विवेचना करते हुए उसके उद्देश्य पर प्रकाश डालिए । 60

4. 'कुकुरमुत्ता' के संदर्भ में निराला की प्रगतिशील चेतना पर प्रकाश डालिए । 60

SECTION – B

5. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं **तीन** की संदर्भ-सहित व्याख्या करते हुए उनकी अभिव्यंजनागत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए : $20 \times 3 = 60$

(क) इन रूपों और व्यापारों के सामने जब कभी वह अपनी पृथक् सत्ता की धारणा से छूटकर–अपने आपको बिल्कुल भूलकर–विशुद्ध अनुभूतिमात्र रह जाता है, तब वह मुक्त-हृदय हो जाता है । जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञान दशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की यह मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है । हृदय की इसी मुक्ति की साधना को मनुष्य की वाणी जो शब्द-विधान करती आई है, उसे कविता कहते हैं । इस साध ना को हम भावयोग कहते हैं और कर्मयोग और ज्ञानयोग का समकक्ष मानते हैं ।

(ख) ''आचार्य, कुलवधू का आसन, कुलमाता का आसन, कुल महादेवी का आसन दुर्लभ सम्मान है । यह अकिंचन नारी उस आसन के

http://www.civilserviceindia.com

सम्मुख आदर से मस्तक झुकाती है; परन्तु आचार्य, कुल-माता और कुल महादेवी निरादृत वेश्या की भाँति स्वतंत्र और आत्मनिर्भर नहीं है। ज्ञानी आचार्य, कुलवधु का सम्मान, कुलमाता का आदर और कुल महादेवी का अधिकार कार्य पुरुष का प्रश्रयमात्र है। वह नारी का सम्मान नहीं उसे भोग करने वाले पराक्रमी पुरुष का सम्मान है।

(ग) जीवन के संदर्भ में उसे सदैव हार हुई, पर उसने कभी हिम्मत नहीं हारी। प्रत्येक हार जैसे उसे भाग्य से लड़ने की शक्ति दे देती थी; मगर अब वह उस अन्तिम दशा को पहुँच गया था, जब उसमें आत्मविश्वास भी न रहा था। अगर वह अपने धर्म पर अटल रह सकता, तो भी कुछ आंसू पुँछते; मगर वह बात न थी। उसने नीयत भी बिगाड़ी, अधर्म भी कमाया, कोई ऐसी बुराई न थी जिसमें वह पड़ा न हो; पर जीवन की कोई अभिलाषा न पूरी हूई, और भले दिन मृगतृष्णा की भाँति दूर ही होते चले गये। यहाँ तक कि अब उसे धोखा भी न रह गया था। झूठी आशा की हरियाली और चमक भी अब नज़र न आती थी। हारे हुए महीप की भाँति उसने अपने को तीन बीघे के किले में बन्द कर लिया था और उसे प्राणों की तरह बचा रहा था।

(घ) यह अंधेरा नहीं रहेगा। मानवता के पुजारियों की सम्मिलित वाणी गूंजती है–पवित्र वाणी। उन्हें प्रकाश मिल गया है। तेजोमय! क्षत-विक्षत पृथ्वी के घाव पर शीतल चन्दन लेप रहा है। प्रेम और अहिंसा की साधना सफल हो चुकी है। फिर कैसा भय! विधाता की सृष्टि में मानव ही सबसे बढ़कर शक्तिशाली है। उसको पराजित करना असम्भव है। प्रचण्ड शक्तिशाली बमों से भी नहीं.... पगला आदमी आदमी है, गिनीपिग नहीं। ..... सबरि ऊपर मानुस सत्य!

6. औपन्यासिक कला की दृष्टि से 'गोदान' उपन्यास की समीक्षा कीजिए। 60

7. शिल्प एवं विषय की दृष्टि से स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी पर प्रकाश डालिए। 60

8. रामचंद्र शुक्ल **अथवा** कुबेरनाथ राय की निबन्ध कला पर प्रकाश डालिए। 60